RJPP, Vol. XXIV, No.I, Oct.25-Mar.26, ISSN (P) : 0976-3635, (e) :2454-3411
Impact Factor 8.873

भारत के सम्पूर्ण विकास हेतु एक परिकल्पनाः विकसित भारत @2047

प्रो (डॉ) अनिता रानी
श्रीमती बी0डी0 जैन गर्ल्स पी.जी. कॉलेज,
आगरा
ईमेलः dr.anita80@gmail.com

सारांश

विकसित भारत @2047 भारत की स्वतन्त्रता के सौ वर्ष पूर्ण होने तक भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाने की भारत सरकार की एक परिकल्पना है। भारत सरकार की यह परिकल्पना केवल भारत की समृद्धि से सम्बन्धित नहीं है बल्कि इसमें भारत की सामाजिक प्रगति, पर्यावरण स्थिरता तथा प्रभावी शासन भी सम्मिलित हैं। विकसित भारत @2047भारत सरकार का एक ऐसा संकल्प है जिसमें भारत की प्रगति को युवाओं, गरीबों, महिलाओं तथा किसानों की प्रगति पर आधारित माना गया है। वर्ष 2047 को, भारत की स्वतन्त्रता की 100 वीं वर्षगांठ के रूप में मानाया जायेगा। भारत सरकार के अनुसार इस समय को ना केवल उत्सव के रूप में मनाया जायेगा बल्कि इस दौरान यह परीक्षण भी किया जायेगा कि भारत ने अपनी विकास यात्रा के दौरान कितनी उन्नति की है। भारत सरकार की इस परिकल्पना में समावेशी तथा सतत् विकास पर विशेष जोर दिया गया है। समावेशी विकास का अर्थ है कि विकास के लाभ भारत के सभी नागरिकों तक बिना किसी भेदभाव के पहुँचे तथा सभी का विकास हो एवं सभी का लाभ हो। सतत् विकास का तात्पर्य ऐसी वृद्धि से है जो पर्यावरण की रक्षा करते हुए, मानव की वर्तमान आवश्यकताओं को पूरा करे तथा भविष्य में संसाधनों का लाभ ले सकें। पिछले कुछ दशकों में भारत के विकास में लगातार मजबूती आई है। भारत में जहाँ एक ओर डिजिटल इंडिया, मेक इन इंडिया तथा स्टार्टअप इंडिया जैसे प्रमुख कार्यक्रमों ने उद्यमिता तथा नवाचार को प्रोत्साहित किया है वहीं आईटी, विनिर्माण, तथा सेवा क्षेत्रों ने भारत की अर्थव्यवस्था को नई ऊँचाईयाँ प्रदान की हैं, परन्तु वर्तमान समय में भी कई ऐसे क्षेत्र हैं जो विकास के क्षेत्र में पीछे छूट गये हैं तथा जहाँ विकास की अत्यन्त आवश्यकता है जैसे गरीबी, बेरोजगारी, शिक्षा तथा स्वास्थ्य आदि। भारत के सम्पूर्ण विकास की परिकल्पना को सार्थक रूप प्रदान करने हेतु भारत सरकार द्वारा कुछ रणनीतियों का गठन किया गया है जिनका कार्य ऐसे क्षेत्रों में विकास की प्रक्रिया को सम्पन्न कराना है जो अभी तक पूर्ण रूप से विकसित नहीं हुए हैं। बेहतर स्वास्थ्य

Reference to this paper should be made as follows:
Received: 03-03-26
Approved: 20-03-26

प्रो (डॉ) अनिता रानी

भारत के सम्पूर्ण विकास हेतु एक परिकल्पनाः विकसित भारत @2047

RJPP Oct.25-Mar.26,
Vol. XXIV, No. I,
Article No. 17
Pg. 165-171

Online available at:
https://anubooks.com/journal-volume/rjpp-mar-2026-vol-xxiv-no1--270

https://doi.org/10.31995/rjpp.2026.v24i01.017

सेवाएँ, रोजगार तथा कौशल के समान अवसर, सभी के लिए अनिवार्य शिक्षा, प्रत्येक क्षेत्र में महिलाओं की बराबर भागीदारी, डिजिटल तथा वित्तीय समावेशन तथा कृषि के क्षेत्र में सुधार हेतु विभिन्न नई रणनीतियाँ भारत को एक पूर्ण रूप से विकसित राष्ट्र बनाने हेतु अत्यन्त आवश्यक हैं। इस दिशा में भारत सरकार की परिकल्पना ,विकसित भारत @2047 का लक्ष्य समाज के प्रत्येक क्षेत्र को विकास के समान अवसर प्राप्त कराना है।

मुख्य बिन्दु

विकसित भारत @2047, समावेशी विकास का अर्थ एवं आवश्यकता, सतत् विकासः अर्थ, लक्ष्य एवं दिशा, भारत की वर्तमान स्थिति : उपलब्धियाँ तथा चुनौतियाँ, समावेशी तथा सतत् विकास हेतु प्रमुख क्षेत्रिय रणनीतियाँ, निष्कर्ष

विकसित भारत @2047:– विकसित भारत @2047**,** भारत सरकार का एक दृष्टिकोण है, जिसका लक्ष्य भारत की आजादी की 100 वीं वर्षगांठ तक अर्थात सन् 2047 तक देश को एक विकसित राष्ट्र में बदलना है। भारत सरकार के इस लक्ष्य में भारत की आर्थिक समृद्धि, सामाजिक प्रगति के साथ–साथ पर्यावरणीय स्थिरता तथा सुशासन जैसे पहलू शामिल हैं। इसमें युवाओं, गरीबों, महिलाओं तथा किसानों की मुख्य भागीदारी है। भारत सरकार की यह रणनीति भारत के आर्थिक विकास, सामाजिक प्रगति, पर्यावरणीय स्थिरता तथा सुशासन के चार स्तंभों पर आधारित है। विकसित भारत @2047 भारत सरकार की एक ऐसी परिकल्पना है जिसका उद्देश्य सन् 2047 तक भारत सरकार को एक विकसित राष्ट्र का दर्जा प्राप्त कराना है। जिसके लिए देश के आर्थिक, सामाजिक पर्यावरणीय तथा शासन के विकास के क्षेत्र में किए जाने लिए वाले प्रयासों को एकजुट करने का लक्ष्य रखा गया है। विकसित भारत @2047 भारत सरकार की एक परिकल्पना है जिसे प्रभावी ढंग से पूर्ण करने हेतु भारत सरकार द्वारा विशिष्ट रणनीतियाँ तैयार की गई हैं। इन रणनीतियों के अन्तर्गत विभिन्न राष्ट्रीय कार्यक्रमों तथा योजनाओं का प्रारम्भ किया गया है जैसे– मेक इन इंडिया, आत्मनिर्भर भारत, डिजिटज इंडिया, डिजिटल साक्षरता, स्किल इंडिया मिशन तथा प्रधानमंत्री गति शक्ति मास्टर प्लान आदि। इन सभी राष्ट्रीय कार्यक्रमों का सामूहिक उददेष्य भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाने के लिए एक मजबूत पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण करना है। इस उद्देश्य को पूर्ण करने के लिए भारत सरकार ने युवाओं तथा व्यापक जन समुदाय को इसमें शामिल करने की पहल प्रारम्भ की है जिसके लिए भारत के नागरिकों के विचारों तथा सुझावों को इसमें शामिल करने का निर्णय लिया गया है। भारत सरकार के अनुसार विकसित भारत की परिकल्पना को साकार रूप प्रदान करने के लिए इसमें सभी भारतीय नागरिकों की सक्रिय भागीदारी अत्यन्त आवश्यक है।

समावेशी विकास का तात्पर्य एवं अपरिहार्यताः– समावेशी का अर्थ है, किसी भी व्यक्ति, समूह या वस्तु को बाहर न रखकर सभी को साथ लेकर चलना। समावेशी विकास का तात्पर्य एक ऐसे विकास के दृष्टिकोण से है जो यह सुनिश्चित करता है कि समाज के सभी वर्गों को अवसरों, संसाधनों तथा आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक प्रगति के लाभों तक समान अवसर प्राप्त हों। यह असमानता क77ो कम करने तथा सम्पूर्ण जनसंख्या की आवश्यकताओं को पूरा करने पर केन्द्रित है। समावेशी विकास का मूल उद्देश्य है कि समाज की सभी सामाजिक, आर्थिक तथा भौगोलिक श्रेणियों को विकास की प्रक्रिया में शामिल किया जाए। इसका तात्पर्य है कि ऐसा विकास जो कि जाति, धर्म, भाषा, लिंग, क्षेत्र (ग्रामीण अथवा शहरी) तथा आर्थिक स्थिति के आधार पर किसी भी भेदभाव से मुक्त हो। यह एक ऐसी विचाराधारा है जिसमें समाज के तीव्र विकास की बात ही नहीं होती बल्कि

होने वाले विकास का मूल्यांकन भी किया जाता है तथा यह पता लगाया जाता है कि सभी क्षेत्रों का विकास किस स्तर तक हुआ है।

भारत विविधताओं का देश है। यहाँ विभिन्न भाषाएँ, संस्कृतियाँ तथा सामाजिक समूह देखने को मिलते है। यहाँ के लोगों में जाति तथा धर्म की भिन्नता के साथ–साथ आर्थिक भिन्नता भी पायी जाती है। यहाँ पर यदि विकास की प्रक्रिया केवल कुछ वर्गों तक ही सीमित रह जाए तो समाज में असंतोष, असमानता तथा विभाजन का खतरा बढ़ जाता है। इस परिस्थिति में समावेशी विकास इन असमानताओं को मिटाकर देश में सामाजिक सौहार्द तथा आर्थिक एकता को सुनिश्चित करता है भारत में समावेशी विकास को प्रभावी बनाने के लिए विभिन्न आयामों पर कार्य करना आवश्यक है जैसे–शिक्षा तक समान पहुँच, स्वास्थ्य सेवाओं का सार्वभौमिकरण, आय तथा रोजगार के अवसरों में समानता, लैंगिक समानता तथा डिजिटल एवं वित्तीय समावेशन।

सतत् विकासः तात्पर्य, उद्देश्य एवं दिशा– सतत् विकास का अर्थ है वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं को पूरा करते हुए भावी पीढ़ियों के लिए संरक्षित करना जिससे कि आने वाली पीढ़ियों की आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके। सतत् विकास शब्द पहली बार वर्ष 1987 में ब्रंटलैंड आयोग द्वारा परिभाषित हुआ। जिसे 'हमारा साझा भविष्य' के नाम से भी जाना जाता है। सतत् विकास मुख्य रूप से तीन स्तंभों पर टिका है– आर्थिक रूप से व्यवहार्य, सामाजिक रूप से न्याय संगत तथा पर्यावरणीय रूप से सुरक्षित। यह प्राकृतिक संसाधनों, जैसे–तेल, खनिज तथा वन आदि के विवेक पूर्ण उपयोग पर बल देता है ताकि वे भविष्य के लिए संरक्षित रहें। विकास की प्रक्रिया में प्रदूषण को कम करना तथा पारिस्थितिकी तंत्र को संतुलित रखना इसका मूल उददेश्य है।

वर्ष 2015 में संयुक्त राष्ट्र के सभी देशों ने संयुक्त रूप से 2030 के लिए 17 सतत् विकास लक्ष्य (DG) निर्धारित किये हैं। इनमें गरीबी उन्मूलन, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, लिंग समानता, स्वच्छ ऊर्जा, जल स्वच्छता तथा जलवायु जैसे लक्ष्य शामिल हैं। वर्ष 2015 से लेकर वर्ष 2025 तक भारत ने सतत् विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने में उल्लेखनीय प्रगति की है। नीति आयोग के मार्गदर्शन में भारत पहली बार क्ळ सूचकांक के शीर्ष 100 देशों में शामिल हुआ है। भारत की उपलब्धियों में गरीबी की कमी, स्वच्छ ऊर्जा तक पहुँच तथा स्वास्थ्य जिसके अंतर्गत (मातृ मृत्यु दर में गिरावट) शामिल हैं। भारत में, पिछले दस सालों में मातृ मृत्यु दर 130 से घटकर 80.5 हो गई है। भारत सरकार द्वारा संचालित आयुष्मान भारत योजना ने गरीबों के हित के लिए बेहतर स्वास्थ्य बीमा प्रदान किया है। सरकार द्वारा चलाई जाने वाली सौभाग्य योजना के तहत लगभग 100ः घरों का विद्युतीकरण पूर्ण हुआ है। भारत में पिछले 10 सालों में सौर ऊर्जा क्षमता 26 गुना बढ़ी है। प्राकृतिक श्रोत द्वारा ऊर्जा के उत्सर्जन ने भारत में विद्युत की पूर्ति हेतु एक नई दिशा प्रदान की है। शिक्षा के क्षेत्र में भी पिछले दस सालों में अत्यधिक विकास हुआ है। भारत में प्रारंभिक शिक्षा में सकल नांमाकन दर लगभग 99.9ः तक पहुँच गई है। पोषण अभियान तथा राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम (NFSA) के माध्यम से भारत में कुपोषण की दर पहले से कम हुई है। स्वच्छता के क्षेत्र में भी स्वच्छ भारत मिशन के माध्यम से देश ने खुले में शौच मुक्त स्थिति प्राप्त की है। देश में, विकास के इन सभी क्षेत्रों में सतत् विकास प्रक्रिया कारगर सिद्ध हुई है।

भारत की वर्तमान स्थितिः उपलब्धियाँ तथा चुनौतियाँः– पिछले दो दशक में भारत की विकास दर में लगातार मजबूती दिखाई दी है। आई टी, फार्मास्यूटिकल्स, विनिर्माण तथा सेवा क्षेत्रों ने भारत की अर्थ व्यवस्था को नई ऊँचाइयों पर पहुँचाया है। मेक इन इंडिया, डिजिटल इंडिया तथा स्टार्टअप इंडिया जैसे प्रमुख कार्यक्रमों ने उद्यमिता तथा नवाचार को प्रोत्साहित किया है। भारत ने गरीबों को कम करने में भी उल्लेखनीय प्रगति की है, लेकिन अभी भी लाखों लोग गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन कर रहे हैं। वर्तमान समय में बेरोजगारी, भारत में एक गंभीर समस्या बनी हुई है। बेरोजगारी की समस्या ने यहाँ के युवाओं को अत्यधिक प्रभावित किया है। भारत में शिक्षा एवं स्वास्थ्य के क्षेत्र में पहले से कहीं अधिक विकास हुआ है फिर भी गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा तथा स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच के मामले में अभी भी भारत पीछे है। भारत में पर्यावरणीय विकास तथा जलवायु परिवर्तन एक बड़ा मुद्दा है। CO_2 उत्सर्जन में अत्यधिक वृद्धि तथा ओजोन क्षति के कारण भारत में जलवायु परिवर्तन एक बहुत बड़ी समस्या बनी हुई है। इन सभी के दुष्प्रभावों से बढ़ते तापमान, असामान्य वर्षा तथा सूखे की घटनाएँ निरंतर बढ़ती जा रही हैं। इस दिशा में न केवल नीति निर्माण, बल्कि व्यवहारिक क्रियान्वयन की भी आवश्यकता है। वर्ष 2047 तक भारत के पूर्ण विकसित राष्ट्र बनने की राह में अभी विभिन्न चुनौतियाँ तथा संभावित बाधाएँ हैं। भारत को एक विकसित राष्ट्र का दर्जा प्राप्त करने के लिए आवश्यक उच्च वार्षिक विकास दर को बनाए रखना एक महत्वपूर्ण चुनौती है जिसका कारण भारत की आर्थिक विकास दर का ठहराव है। वर्तमान समय में भारत का एक ऐसी आर्थिक स्थिति में फंसने का खतरा है जहाँ कोई देश विकासशील अवस्था में एक निश्चित स्तर की आय तक तो पहुँच जाता है, लेकिन उसके बाद उसकी आर्थिक वृद्धि दर रुक जाती है। अगले दो दषकों में भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाने के लिए भारत की आर्थिक विकास दर का निरंतर बढ़ना आवश्यक है। भारत के लोगों में लगातार बनी हुई आय असमानता तथा लोगों का शहरी एवं ग्रामीण श्रेणियों में विभाजन भी समावेशी विकास में बाधक है। इन भिन्नताओं के कारण समाज में आपसी मतभेद तथा तनाव पैदा हो सकता है। बढ़ती जनसंख्या ने युवाओं के लिए रोजगार के अवसरों को अधिक कठिन बना दिया है। वर्तमान समय में युवाओं के लिए पर्याप्त कौशल तथा रोजगार के व्यापक अवसर भारत के लिए एक बहुत बड़ी चुनौती बने हुए हैं। यह अत्यन्त आवश्यक है कि अगले दो दशकों में युवाओं के लिए कौशल विकास कार्यक्रमों को बढ़ाया जाये जिससे कि युवाओं में कौशल का विकास हो तथा उन्हें रोजगार के नये अवसर प्राप्त हों।

भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाने हेतु समाज में व्याप्त शिक्षा तथा स्वास्थ्य से सम्बन्धित पहुँच तथा असमानताओं की खामियों को दूर करना अत्यन्त आवश्यक है। भारत में लिंग भेद की विचारधारा यहाँ के विकास में बाधक है। यहाँ आज भी उच्च शिक्षा के क्षेत्र में महिलाओं का अनुपात पुरूषों से कम है। विकसित भारत के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि लड़कियों तथा महिलाओं की शिक्षा का अनुपात लड़कों तथा पुरूषों के बराबर हो तथा रोजगार के प्रत्येक क्षेत्र में महिलाओं को बराबर का अधिकार प्राप्त हो। अपनी गहरी जड़े जमा चुकी लैंगिक असमानता की भावना तथा सामाजिक भेदभाव भारत के विकास के लिए एक बहुत बड़ी चुनौती हैं। भारत में पर्यावरण संबंधी चिंताएँ जैसे–जलवायु परिवर्तन तथा प्राकृतिक संसाधनों का दोहन भारत के सतत् विकास हेतु गंभीर समस्याएँ पैदा कर रहे हैं। वर्तमान समय में हो रहे तीव्र औद्योगीकरण, वनों की कटाई तथा

शहरीकरण के कारण यहाँ जल पर संकट, वायु प्रदूषण तथा भू–क्षरण की समस्याएँ अत्यधिक बढ़ गई हैं जिसके कारण जैव विविधता का अत्यधिक नुकसान हो रहा है। भारत में विकास परियोजनाओं के लिए वनों की कटाई प्रतिवर्ष लगभग 15 लाख हेक्टेयर जैव विविधता को नष्ट कर रही है तथा जलवायु परिवर्तन के खिलाफ कार्य करने वाली प्राकृतिक सुरक्षा को कमजोर कर रही है। जलवायु परिवर्तन के कारण भारत 'जल संकटग्रस्त' स्थिति में है। यहाँ प्रति व्यक्ति ताजे जल की उपब्धता में निरंतर गिरावट आ रही है जिसके कारण कृषि तथा लोगों की आजीविका प्रभावित हो रही है। वर्तमान समय में भारत के विभिन्न शहरों में निरंतर बढ़ रहे प्रदूषण के स्तर के कारण सार्वजनिक स्वास्थ्य तथा आर्थिक उत्पादकता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। ये सभी समस्याएँ भारत के सतत् विकास को पूर्ण करने हेतु बहुत बड़ी चुनौतियाँ है। इन समस्याओं से निपटने के लिए, भारत को नवीकरणीय ऊर्जा के उपयोग, कड़े पर्यावरण नियमों, वनीकरण को बढावा देने तथा सतत् विकास के लक्ष्यों को सख्ती से लागू करने की आवश्यकता है।

समावेशी तथा सतत् विकास हेतु प्रमुख क्षेत्रिय रणनीतियाँ–: समावेशी तथा सतत् विकास हेतु प्रमुख क्षेत्रिय रणनीतियाँ वे एकीकृत उपाय हैं जो किसी विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र के पर्यावरणीय संतुलन को बनाए रखते हुए, सामाजिक व आर्थिक विकास का लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचाते हैं। ये रणनीतियाँ स्थानीय संसाधनों के कुशल उपयोग, ग्रीन एनर्जी, शिक्षा, स्वास्थ्य तथा भागीदारी पूर्ण शासन के माध्यम से गरीबी कम करने तथा दीर्घकालीन विकास सुनिश्चित करने पर केन्द्रित हैं।

1– शिक्षा का सर्वसमावेशीकरणः– शिक्षा का सर्वसमावेशीकरण एक ऐसी शिक्षा प्रणाली है, जिसमें शारीरिक, मानसिक, सामाजिक या आर्थिक रूप से भिन्न सभी बच्चों को एक साथ एक ही कक्षा में तथा एक ही स्कूल में पढ़ाया जाता है। शिक्षा का यह तरीका समानता को बढ़ावा देता है जहाँ विशिष्ट आवश्यकताओं वाले बच्चों को अलग न करके उन्हें सामान्य बच्चों के साथ शामिल किया जाता है। ताकि बिना भेदभाव के सभी को शिक्षा के समान अवसर प्राप्त हो सकें। समावेशी शिक्षा का मुख्य उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि कोई भी बच्चा शिक्षा से वंचित न रहे तथा प्रत्येक बच्चा अपनी क्षमता के अनुसार आगे बढ़ सके, चाहे उसकी व्यक्तिगत भिन्नताएँ कुछ भी हों। शिक्षा के क्षेत्र में विकास को सुनिश्चित करने के लिए सरकार को कुछ विषेश रणीनतियों पर कार्य करना आवश्यक है जैसे–सभी बच्चों के लिए मुफ्त तथा गुणवत्तापूर्ण शिक्षा लागू करना, शिक्षा के लिए डिजिटल शिक्षण सामग्री का अधिक्तम उपयोग करना, विशेष रूप से दलित, आदिवासी तथा पिछड़े एवं दिव्यांग बच्चों के लिए योजनाएँ बनाना तथा संचालित करना, शिक्षक प्रशिक्षण को प्रतिस्पर्धी तथा अधिक प्रभावी बनाना।

2– स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तारः– एक स्वस्थ्य समाज ही विकास की सच्ची पहचान है। समावेशी तथा सतत् विकास के लिए स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार एक सुलभ, सस्ती एवं डिजिटल रूप से सक्षम प्रणाली के माध्यम से किया जा रहा है। इसका उद्देश्य स्वास्थ्य सेवा प्रणाली को मजबूत करना तथा पर्यावरण के अनुकूल अस्पताल प्रणालियों को बढ़ावा देना है। सतत् विकास का लक्ष्य वर्ष 2030 तक सभी के लिए किफायती और गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएँ सुनिश्चित करना है जिसमें माताओं और बच्चों की मृत्यु दर कम करना शामिल है। इसके साथ ही भारत में स्वास्थ्य सेवाओं में

डिजिटल तकनीक का प्रयोग करना शामिल है। डिजिटल तकनीक के प्रयोग के माध्यम से स्वास्थ्य के क्षेत्र में सुधार, जैसे–डिजिटल स्वास्थ्य रिकॉर्ड, दूरदराज के क्षेत्रों में टेलीमेडीसिन तथा डिजिटल तकनीक के माध्यम से उन्नत निदान सेवाएँ प्रदान करना शामिल हैं। बेहतर स्वास्थ्य सेवाओं के लिए सामुदायिक भागीदारी तथा क्षेत्रीय स्वास्थ्य केन्द्रों को सुदृढ़ बनाना तथा वंचित वर्गों को आसानी से स्वास्थ्य सेवाएँ जैसे–टीकाकरण, जननी सुरक्षा तथा पोषण आदि प्रदान करना शामिल है। वर्ष 2047 तक स्वास्थ्य सेवाओं के पूर्ण विकास के लिए सरकार द्वारा विभिन्न प्रयास किए गए है जैसे–आयुष्मान भारत योजना। इस योजना के माध्यम से भारत सरकार द्वारा स्वास्थ्य सेवाओं को सुलभ बनाने का प्रयास किया गया है। स्वास्थ्य सेवाओं के विस्तार की रणनीतियों में प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों को आधुनिक उपकरण तथा संसाधन उपलब्ध कराना, स्वास्थ्य बीमा योजनाओं का विस्तार करना, मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देना तथा टीकाकरण एवं रोग रोकथाम कार्यक्रमों को मजबूत करना शामिल है।

3– रोजगार तथा कौशल विकासः– भारत के पूर्ण विकास के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि सभी लोगों को स्थायी रूप से रोजगार की प्राप्ति हो। प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना तथा स्किल इंडिया मिशन जैसी योजनाओं के माध्यम से भारत सरकार ने लोगों को प्रशिक्षित करने, उद्यमिता को बढ़ाने तथा रोजगार के नये अवसर उत्पन्न करने का प्रयास किया है। विकसित भारत के निर्माण हेतु भारत सरकार की विभिन्न रणनीतियाँ रही हैं। जिनमें से कुछ प्रमुख हैं– तकनीकी तथा व्यवसायिक शिक्षा पर जोर, ग्रामीण क्षेत्रों में स्वरोजगार तथा लघु उघोग को प्रोत्साहन तथा स्वरोजगार हेतु आसान ऋण तथा समर्थन।

4– महिलाओं की भागीदारीः– भारत के पूर्ण विकास के लिए लिंग समानता की अत्यन्त आवश्यकता है। इसके लिए यह जरूरी है कि महिलाओं को पुरूषों के बराबर अधिकार प्राप्त हों। इस हेतु सरकार द्वारा विभिन्न योजनाओं जैसे–बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ तथा महिला शक्ति केन्द्र आदि के माध्यम से महिलाओं को समान अधिकार दिलाने तथा लैगिंक भेदभाव को कम करने हेतु प्रयास किए गए हैं। महिलाओं के विकास की रणनीतियों में प्रमुख हैं– महिलाओं को कार्यस्थल पर समान अवसर प्राप्त हो, महिलाओं की सुरक्षा तथा शिक्षा पर विशेष योजनाएँ तथा उनके आर्थिक सशक्तिकरण के लिए वित्तीय सहायता।

5– डिजिटल तथा वित्तीय समावेशन– भारत के विकास में डिजिटल तकनीक तथा वित्तीय समावेशन प्रमुख स्तंभ है, जो जन धन–आधार–यूपीआई ट्रिनिटी के माध्यम से बैकिंग सेवाओं को सुदूर क्षेत्रों तक पहुँचा रहे हैं। भारत में डिजिटल तकनीक को बढ़ावा देने हेतु विभिन्न योजनाओं का संचालन हुआ हैं जिनका उद्देश्य प्रत्येक क्षेत्र को डिजिटल नेटवर्क से जोड़ना है। इस क्षेत्र में विभिन्न रणनीतियों के माध्यम से विकास के प्रयास किए जा रहे हैं जैसे– भारत के सभी ग्रामों तक उच्च–गति इंटरनेट की पहुँच, डिजिटल साक्षरता कार्यक्रमों का संचालन, बिना बैंक खाते वाले नागरिकों का वित्तीय समावेशन।

6– कृषि आधारः– कृषि को भारत की अर्थव्यवस्था का आधार माना गया हैं। भारत में कृषि के क्षेत्र में विकास, उत्पादकता बढ़ाने तथा किसानों की आय को दोगुना करने के लिए भारत सरकार द्वारा कई प्रमुख कृषि सुधार कार्यक्रम तथा योजनाओं का प्रारम्भ किया गया है जैसे–प्रधान मंत्री किसान सम्मान निधि, प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना तथा मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना आदि।

भारत के विकास हेतु सरकार की कृषि सुधार रणनीतियों में कृषि की उत्पादकता बढ़ाने, आय सुनिश्चित करने तथा सतत् कृषि पर ध्यान केन्द्रित किया गया है। इसके प्रमुख उपायों में विभिन्न कृषि योजनाओं के माध्यम से किसानों को वित्तीय सहायता, जल प्रबंधन, डिजिटल विपणन तथा जैविक खेती को बढ़ावा देना शामिल हैं।

इनके अतिरिक्त पर्यावरण के विभिन्न मुद्दे तथा नीति एवं शासन में सुधार भारत के विकास के लिए अत्यन्त आवश्यक हैं। पर्यावरण संतुलन के लिए ऊर्जा सुरक्षा तथा जल संरक्षण तथा वायु प्रदूषण के क्षेत्र में सरकार द्वारा विभिन्न प्रयास किए गए हैं। जल संचयन, जल पुनर्चक्रण तथा ऊर्जा दक्षता मानकों को सख्ती से लागू करना, राष्ट्रीय स्वच्छ वायु कार्यक्रम तथा इलेक्ट्रिक वाहनों को बढ़ावा देना, भारत के विकास हेतु प्रदूषण नियन्त्रण की प्रमुख रणनीतियों में शामिल हैं।

निष्कर्षः– विकसित भारत / 2047 का लक्ष्य केवल भारत की आर्थिक प्रगति ही नहीं, बल्कि समाज के प्रत्येक क्षेत्र तक विकास के समान अवसर पहुँचाना है। भारत सरकार की यह परिकल्पना तभी सार्थक हो सकती है जब इसके लिए सभी एक जुट होकर कार्य करें। इस उद्देश्य को पूर्ण करने हेतु समावेशी तथा सतत् विकास ही वह मार्ग है जिससे भारत का प्रत्येक नागरिक सम्मान, सुरक्षा तथा अवसर प्राप्त कर सकता है। वर्ष 2047 तक भारत का पूर्ण विकास करके, उसे विकसित देशों की श्रेणी में लाना, हमारी पीढ़ी की सबसे बड़ी तथा गरिमामयी जिम्मेदारी है। इस लक्ष्य को पूर्ण करने हेतु नीति–निर्माण, समाज, भारतीय नागरिकों तथा युवाओं, सबका योगदान अत्यन्त आवश्यक है।

सन्दर्भ

1. विकसित भारत 2047 https: // viksitindia.com
2. समावेशी विकास (Inclusive Growth) क्या है? https://www.sanskritiias.com
3. सतत् विकास लक्ष्यों के 10 वर्षः भारत की प्रगति (10YEAR OF SDGP: INDIA'S PROGRESS, 12 NOV, 2025 https://visionias.in
4. समावेशी शिक्षा का क्या महत्व है? पोर्टोबेलो इंस्टीट्यूट 4 सितंबर, 2024, https://blog.portobelloinstitute.com
5. भारत में समावेशी स्वास्थ्य देखभाल को नया आकार देना, 9 अप्रैल, 2024, https://www.drishtiias.com
6. अहमद, जीशान, सतत् विकास और पर्यावरणः भारत की संभावनाएँ और चुनौतियाँ, March-April -2025, International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR) Volume-7, Pg-1-6 https://www.ijfmr.com
7. Transforming our world: The 2030 Agenda for Sustainable Development. United Nation, https://sdgs. un.org
8. भारत सरकार की रोजगार सष्जन योजनाएँ/कार्यक्रम, श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, Directorate General of Employment (DGE) Gol India https://dge.gov.in